स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

प्रो० सत्यनारायण मेहता

साहित्यमे शब्दशक्तिक महत्व

साहित्यमे 'शब्द' आ 'अर्थ'क अत्यधिक महत्व होइत अछि। वास्तवमे 'शब्द' मे अपार अर्थकें व्यक्त करबाक शक्ति रहैत छैक। आचार्य लोकनि 'शब्द' आ ओकर महत्व पर अपन-अपन काव्यशास्त्रीय ग्रन्थमे विस्तारपूर्वक चर्चा कएने छथि। काव्यक परिभाषाकें स्पष्ट करबाक क्रम मे सेहो आचार्य लोकनि शब्दार्थक महत्व दिस संकेत कए चुकल छथि। 'शब्द' तथा 'वाक्यक सार्थकता ओकर अर्थमे निहित रहैत छैक। वएह 'शब्द' शब्द कहबैत अछि जकर किछु अर्थ होअ। दोसर शब्दमे जाहि शक्ति द्वारा अर्थबोध होइत अछि ओकरे 'शब्दशक्ति' कहल जाइत अछि।

काव्य रूपी पुरुषक शरीर 'शब्द' एवं अर्थसँ निर्मित होइत अछि। 'शब्द' तँ शरीर अछि तँ 'अर्थ' ओकर आत्मा। शब्दशक्तिक तात्पर्य काव्यशास्त्रमे ओहि शक्तिसँ अछि जे कोनो शब्दक अन्तर्निहित अर्थकें स्पष्ट करैत अछि। प्रायः जतबा शब्द लोकमे प्रचलित अछि ताहि सभमे किछु ने किछु अर्थ अवश्य रहैत छैक तथा ओ 'अर्थ' जाहि शक्तिक कारणें स्पष्ट भए पबैत अछि तकरे काव्यशास्त्रक आचार्य लोकनि 'शब्दशक्ति' नामकरण कएने छथि।

संस्कृतक आचार्य लोकनि शब्दक तीन प्रकार मानने छथि — वाचक, लाक्षणिक एवं व्यञ्जक। एही शब्द भेदक आधार पर आचार्य लोकनि तीन प्रकारक अर्थक कल्पना कएने छथि तथा तीनू प्रकारक अर्थ तीन प्रकारक शक्तिक सहायतासँ निष्पन्न होइत अछि — अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना।

अभिधा — भाषाक जाहि शक्तिसँ कोनो सामान्य प्रचलित अर्थक बोध होइत अछि तकरा 'अभिधाशक्ति' कहल जाइत अछि। अर्थात् अभिधा वृत्ति द्वारा शब्दक मूल अथवा मुख्य अर्थक ज्ञान होइत अछि। यथा— 'पुस्तक आनू', एहि पुस्तकक अर्थ पोथीसँ होएत आन वस्तु नहि। कारण एहि शब्दक श्रवण मात्रहिसँ श्रोताकें ओकर अर्थ स्पष्ट भए जाइत अछि। तैं एहि प्रकारें जाहि शब्दकें सुनितहि ओकर अर्थ स्पष्ट भए जाए तँ ओकरा 'अभिधा' शब्दशक्ति कहल जाएत।

Scanned with CamScanner

साधारणतया अभिधासँ तीन प्रकारक अर्थक बोध होइत अछि – रूढ़ि, यौगिक, एवं योगरूढ़ि।

रूढ़ि :– एहन शब्द जे खण्डित नहि हो, यथा – राम, घर आदि

यौगिक :– ओहन शब्द जे खण्डित हो आओर अर्थ सेहो लागि जाए, यथा – भूपति, राजपुत्र आदि। भूपति – भू+पति अर्थात् पृथ्वीक स्वामी। अतः ई यौगिक शब्द राजाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि।

योगरूढ़ि – एहन शब्द स्वरूपतः यौगिक होइछ किन्तु अर्थक दृष्टिएँ यौगिक नहि रूढ़ि होइछ। आचार्य लौकाजिक शब्दमे जतए एक अर्थक प्रतिपादनक हेतु समुदायशक्ति एवं अवयव शक्ति दुनूक आवश्यकता होइत अछि ततए योगरूढ़ि शब्द बुझल जएबाक चाही। उदाहरणार्थ – गणनायक शब्दकेँ लेल जा सकैछ। ई मात्र गणेश शब्दसँ युक्त अछि। एहिना 'पंकज' शब्दकेँ खण्डित कएला पर पंक+ज। एकर यौगिक अर्थ भेल पंकसँ जन्म लेनिहार। किन्तु पंकसँ जन्म लेनिहार तँ अनेक वस्तु होइत अछि। यथा – सेमार, कमल आदि। किन्तु ई शब्द कमलक अर्थबोध हेतु रूढ़ सदृश भए गेल अछि। अतः एहन शब्द सभ योगरूढ़िक अन्तर्गत परिगणित कएल जाइछ।

लक्षणा – 'लक्षणा' शब्दशक्तिक दोसर मुख्य प्रभेद अछि। काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मटक कथन छनि जे मुख्य अर्थक बाधा भेला पर कोनो रूढ़ि वा प्रयोजनक आधार पर सम्बन्धित अन्य अर्थक जाहि शक्ति द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होइत अछि तकरा 'लक्षणा' नामक शब्दशक्ति कहल जाइत अछि।

तात्पर्य ई जे जखन कोनो शब्दक वा शब्द समूहक साक्षात सांकेतिक अर्थ अभिधा नामक शब्दशक्ति द्वारा नहि स्पष्ट भए पबैत अछि, तँ बुझबाक चाही जे ओहि मे एकटा अर्थ अछि जे मुख्यार्थसँ सम्बन्धित नहि अछि। भए सकैत अछि ओ रूढ़ि अर्थात कोनो प्रसिद्ध मान्यता वा प्रसिद्धि अथवा प्रयोजनक कारणेँ ओ स्पष्ट भए जाए। एहि प्रकारक शब्दशक्ति

द्वारा जाहि अर्थ लक्षित भए जाइत अछि तकरे लक्षणा नामक शब्द शक्ति कहल जाइत अछि। एहि प्रकारेँ लक्षणा नामक शब्दशक्तिक तीन टा मुख्य विशेषता होइत अछि :-

(1) अभिधासँ प्राप्त मुख्यार्थमे बाधा
(2) मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थक योग (सम्बन्ध)
(3) रूढ़ि एवं प्रयोजन द्वारा अन्य अर्थक बोध

1. अभिधासँ प्राप्त मुख्यार्थमे बाधा :-

जखन मुख्य अर्थ बुझबामे मताक्ष विरोध देखबामे आबए अर्थात् वक्ता अपन जाहि अभिप्रायकेँ प्रकट करए चाहि रहल होअए, से मुख्यार्थक द्वारा स्पष्ट नहि भए सकए तँ ओकरा 'मुख्यार्थमे' बाधा कहल जाइत अछि।

2. मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थक योग :-

मुख्यार्थक बाधित भेला पर जखन अन्य अर्थ ग्रहण कएल जाइत अछि तँ ओकरा मुख्य अर्थक संग सम्बन्ध रहब आवश्यक अछि। एकरे मुख्यार्थ योग कहल जाइछ।

3. रूढ़ि एवं प्रयोजन द्वारा अन्य अर्थक बोध :-

रूढ़िक अर्थ होइछ प्रसिद्धि अर्थात् कोनो वस्तुकेँ विशेष ढंगसँ कहबाक ढंग। जँ केओ अपन मित्रकेँ कोनो बात पर कहैत छथि जे अहाँ निशुद्ध 'बड़द' छी। एहि ठाम बेबकूफकेँ 'बड़द' कहब रूढ़ि अछि। एहन वाक्यक मुख्यार्थमे बाधा कहल जाएत। कारण कतए मनुष्यक स्वरूप आ कतए 'बड़द'क आकृति। वास्तविकता ई अछि जे 'बड़द'के संग एकटा आन्य अर्थ छैक जे ओ व्यक्ति द्वारा अपन मित्रकेँ 'बुद्धिहीन' अथवा 'बेबकूफ' कहब।

लक्षणा मुख्यत: दुइ प्रकारक होइत अछि :-

(1) रूढ़िमूला लक्षणा
(2) प्रयोजनवती लक्षणा

(1) रूढ़िमूला लक्षणा - जतए मुख्य अर्थ स्पष्ट नहि भेला पर शब्द रूढ़िगत अर्थसँ सम्बन्धित लक्ष्यार्थक बोध

होइत अछि ततए रूढ़िमूला लक्षणा मानल जाइत अछि, जेना- जें कहल जाए जे पंजाब युद्ध प्रवीण होइत अछि। तँ एहि ठाम 'पंजाब' शब्दमे लक्षणा अछि। एहिठाम मुख्यार्थ बाधित भए गेल अछि। कारण पंजाब तँ एकटा विशेष भूखण्ड अछि आओर से कोना लड़ि सकैत अछि, तखन मुख्यार्थसँ सम्बन्धित ओहि वाक्यक अन्य अर्थ भेल 'पंजाब निवासी'। पंजाबी कें 'पंजाब' कहब एक प्रकारक रूढ़ि अछि। अतः 'पंजाब युद्ध प्रवीण होइत अछि' वाक्यक अर्थ भेल पंजाब निवासी युद्धमे प्रवीण होइत छथि।

प्रयोजनवती लक्षणा:—

जतए मुख्यार्थक बाधाक पश्चात् मुख्यार्थ सम्बन्धित कोनो विशेष प्रयोजन वा रूपक कारणें शब्दक अन्य अर्थ लक्षित होइत अछि ततए प्रयोजनवती लक्षणा होइत अछि। यथा — 'गंगामे घर अछि' एहिमे मुख्य अर्थ बाधित अछि। गंगामे घर होएब कथमपि सम्भव नहि अछि जँ रहबो करत तँ दहा जाएत। एहि प्रकारें मुख्यार्थ बाधित भेलो पर एकर अर्थ निकटतम वा सामिप्यक कारणें ओहि वाक्यक अर्थ होएत गंगाक तट पर अछि। 'गंगा' शब्द अपन सामिप्य सम्बन्ध द्वारा अपन निकटतमक लक्षणा सँ बोध करबैत अछि। अतः गंगाक तट पर घर अछि। एहिमे मुख्य अर्थक संग लक्ष्यार्थक योग भेल। "गंगामे घर अछि" एहि वाक्यसँ वक्ता कोनो विशेष प्रयोजन व्यक्त करए चाहैत छथि आओर से अछि जे गंगाक तट पर घर रहबाक कारणें ओ अत्यन्त शीतल एवं पवित्र अछि। गंगा कहनहि सँ लक्षणा द्वारा शीतलता एवं पवित्रताक बोध भए जाइत छैक, तँ एहि ठाम 'गंगामे घर अछि' मे लक्षणा प्रयोजन भेल। एकर अतिरिक्त लक्षणाक आओरो भेद होइत अछि।

प्रयोजनवती लक्षणाक मुख्यतः दुइ प्रकारक होइछ — ① गौणी लक्षणा ② शुद्धा लक्षणा। गौणी लक्षणाक दुइ भेद होइछ — ① सारोपा गौणी लक्षणा ② साध्यवसाना गौणी लक्षणा

शुद्धा लक्षणा सेहो दुइ प्रकारक होइछ —

① उपादान लक्षणा ② लक्षण लक्षणा

उपादान लक्षणा पुनः दुइ भेद होइछ —

(1) सारोपा उपादान लक्षणा ② साध्यवसाना उपादान लक्षणा

लक्षण लक्षणा सेहो दुइ प्रकारक होइछ :-
(1) सारोपा लक्षण लक्षणा (2) साध्यवसाना लक्षण लक्षणा

व्यञ्जना :-
जखन अभिधा ओ लक्षणा शक्ति अपन-अपन अर्थ बोध कराए शान्त भए जाइत अछि तखन जाहि शक्तिसँ अर्थक बोध होइत अछि से थिक - व्यञ्जना। व्यञ्जना शब्दक निष्पति वि + अंजना सँ भेल अछि। 'वि' उपसर्ग तथा 'अंज' प्रकाशन धातु अछि। व्यञ्जनाक अर्थ भेल- 'विशेष प्रकारक अंजन'। अंजनकेँ लगौलासँ आँखिक ज्योति बढ़ि जाइत अछि। मुदा जखन विशेष प्रकारक अंजन लगाएल जाइत अछि तखन परोक्ष वस्तु सेहो दृष्टिगोचर होमए लगैत अछि। व्यञ्जनाक द्वारा एहि प्रकारक अर्थ स्पष्ट होइत अछि। जखन अभिधा एवं लक्षणा अर्थ व्यक्त करबामे असमर्थ भए जाइत अछि तखन व्यञ्जना शक्ति काव्यक नुकाएल गूढ़ अर्थ आ सौंदर्यकेँ प्रकट करैत अछि। व्यञ्जना शक्तिसँ व्यंग्यार्थक प्रतीति होइत अछि तकरा ध्वन्यार्थ, सूच्यार्थ, आक्षेपार्थ एवं प्रतीयमानार्थ आदि सेहो कहल जाइत अछि। कारण व्यंग्यार्थ मे तँ अभिधार्थक सदृश कथित रहैत अछि आ ओ ने लक्ष्यार्थक सदृश लक्षित होइत अछि अपितु ई व्यंजित, ध्वनित, सूचित, आक्षिप्त एवं प्रतीयमान होइत अछि। उदाहरण- जँ केओ कहैत अछि जे "हिनकर घर गंगाजीमे छन्हि।" तँ एहन वाक्यमे अभिधाशक्ति द्वारा उत्पन्न वाच्यार्थसँ अन्वय बोध नहि होइछ आओर तखन लक्षणा शक्ति आबि 'तट' रूप लक्ष्यार्थ सूचित करैत अछि आओर तखन वाच्यार्थकेँ संगत करैत अछि। किन्तु, एहि लक्ष्यार्थ अर्थक पश्चात एकटा आओर अर्थ सूचित होइत अछि आओर से होइछ गाममे शीतलता एवं पवित्रताक संग रहब, अन्यथा गंगाक तट पर गाम अछि सरह कहब पर्याप्त छल। एहिना कोनो सामान्य तुकबन्दी करएनिहार कविकेँ कहल जाए जे "अपने तँ महाकवि छी।" तँ एतए व्यञ्जना शक्तिसँ वक्ता अपन इएह अभिप्राय प्रकट करए चाहैत छथि जे अहाँ वस्तुतः कवि नहि छी। एकटा महाकविमे जे गुण सभ रहक चाही, तकर सर्वथा अहाँमे अभाव अछि।

व्यञ्जनाक दुइ भेद कएल गेल अछि-
(1) शाब्दी व्यञ्जना (2) आर्थी व्यञ्जना

Scanned with CamScanner

शाब्दी व्यञ्जना :— जतए व्यंग्यार्थ कोनो विशेष आधार पर अवलम्बित रहैत अछि ततए शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि। तात्पर्य ई जे व्यंग्यक शब्दक स्थान पर ओकर समानार्थक अन्य शब्दकेँ राखि देल जाए आ ओ शब्द व्यंग्यार्थक प्रतीत नहि भए सकए तँ ओकरा शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि। आचार्य लोकनि एकर दुइ भेद कएने छथि-
(1) अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना (2) लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना

(1) अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना :— अभिधा शक्ति द्वारा अनेकार्थक शब्द सभक संयोग आदिक सहायतासँ एक अर्थक निर्णय भए गेलाक पश्चात् जाहि शब्दशक्ति द्वारा व्यंग्यार्थक प्रतीति होइत अछि तकरा अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि।

एहि व्यञ्जनाक मूलमे अभिधावृत्ति काज करैत अछि। आचार्य मम्मटक अनुसार एहि अभिधाक नियामक रहैत आएल अछि - संयोग, वियोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ, प्रकरण, लिंग, शब्दान्तर - सांनिध्य, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति, स्वर। एहि सभमे कोनहु तत्व द्वारा जँ कतहु अनेकार्थक शब्दकेँ कोनहु एक प्रकारविशेष (प्रकरण वा प्रसंगक अनुकूल) अर्थमे बान्हि देल जाए तथा ओहिसँ एक सहन अर्थ उपस्थित भए जाए जे वाच्यार्थसँ सभ प्रकारेँ विलक्षण बुझि पड़ए, तँ ओहि ठाम 'अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना शक्ति (वृत्ति) काज करैत अछि।

(2) लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना :—
जाहि प्रयोजनक सिद्धिक हेतु लक्षणाक आश्रय लेल जाइत अछि आ ओ प्रयोजन जाहि शक्ति द्वारा प्रतीत होइत अछि तकरा लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना कहल जाइत अछि।

एकटा प्रसिद्ध दृष्टान्त अछि - '<u>गंगामे बथान अछि</u>' एतए मुख्य अर्थमे बाधा अछि कारण गंगामे बथान सम्भव नहि भए सकैत अछि। एहिठाम प्रश्न उठैत अछि जे वक्ताक कहबाक की प्रयोजन अछि। अभिधा द्वारा अर्थ नहि स्पष्ट भए सकल। तखन लक्षणा द्वारा ई बुझबामे आएल जे वक्ताक कहबाक अर्थ अछि 'बथान' गंगाक तट पर अछि। एतए 'तट'क 'गंगाजी'मे लोप,

आधाराधेय सम्बन्धक आधार पर कएल गेल अछि। एतबा तँ लक्षणाक आधार पर स्पष्ट भए सकल। अतः आब व्यञ्जनाक आधार पर ज्ञात होइत अछि जे बखान गंगामे दैक से कहैत काल वक्ताक अभिप्राय छल जे बखान गंगाक तट पर अछि ओहिठाम सभ साधन उपलब्ध छैक। एहि प्रयोजनक उपलब्धि व्यञ्जना शक्तिसँ प्राप्त होइत अछि तेँ एतए व्यञ्जना अछि तथा ई व्यञ्जना शब्द द्वारा गृहित अछि तेँ शाब्दी व्यञ्जना अछि एहि व्यञ्जनाक मार्ग लक्षणा शक्ति द्वारा प्रशस्त भेल तेँ एतए लक्षणामूला शाब्दी व्यञ्जना अछि।

आर्थी व्यञ्जना —

आर्थी व्यञ्जनाक अर्थक सहायतासँ व्यंग्यार्थक ज्ञान होइत अछि। एहि हेतु जतए व्यंग्यार्थ कोनो शब्द पर आश्रित नहि भए, बल्कि ओहि शब्दक अर्थ द्वारा ध्वनित होइत अछि, ओतए आर्थी व्यञ्जना होइत अछि। आचार्य विश्वनाथ अर्थ वैशिष्ट्य निर्देश दैत कहैत छथि —

वक्तृबोधव्यवाक्यानामन्यसन्निधिवाच्ययो:
प्रस्तावदेशकालानां काकोश्चेष्टादिकस्य च
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं बोधयेत्सार्थ संभवा
व्यंजनेति सम्बध्यते

अर्थात् जखन वक्ता, बोधव्य, काकु अन्य सन्निधि, प्रस्ताव, देश, काल, चेष्टा आदि विशेषताक कारणेँ व्यंग्यार्थक बोध होइत अछि, तखन आर्थी व्यंजना कहाबैत अछि।

ई आर्थी व्यञ्जना शक्ति अर्थमे विद्यमान रहैत अछि तथा प्रस्तुत मुख्यार्थसँ भिन्न कोनहु अन्य चमत्कारक अर्थक बोध करबैत अछि। ई 'व्यञ्जना' वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ तीनूक शक्ति थिक, तेँ एहि (आर्थी व्यञ्जना शक्ति) सँ तीनू प्रकारक अर्थमे खोल-खोल पर व्यञ्जकता आबि जाइत अछि आओर ओहि स्थलो पर व्यञ्जकता प्रस्तुत एक वाच्यार्थवा, लक्ष्यार्थवा व्यंग्यार्थ अन्य कोनहु व्यंग्यार्थक बोध करबैत अछि (जेना शाब्दी व्यञ्जनासँ कोनो शब्द व्यंग्यार्थ जनबैत अछि) तेँ एकर नामकरण भेल 'आर्थी व्यञ्जना'।

एहि प्रकारेँ कहल जा सकैत अछि जे काव्य-जगत मे शब्दशक्ति, एकर विशेष महत्व अछि। काव्यक समस्त चमत्कार शब्द-शक्तिये एकरसँ चमत्कृत होइत अछि।

———×———